प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाररणादपि ।

स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः ।।24।।

अन्वय प्रजानां विनयाधानाद् रक्षणाद् भरणाद् अपि स पिता (आसीत्); तासां पितरः केवलं जन्महेतवः (आसन्)।

अनुवाद प्रजा को (सन्मार्ग प्रवर्तन रूप विनय (शिक्षा) प्रदान करने के कारण, (विपत्तियों से उनकी)रक्षा करने के कारण तथा (अन्न जल से उनका) भरण-पोषण करने के कारण राजा दिलीप ही वास्तव में प्रजा के पिता थे उनके (प्रजा के) वास्तविक पिता तो केवल उनके जन्म ही देने वाले नाम के पिता थे।

(प्रजा की शिक्षा-रक्षा का काम करने से दिलीप ही उनके वास्तविक पिता थे।

टिप्पणियां

विशेष अपनी सन्तान की रक्षा करना, उसका भरण-पोषण और उसे सुशिक्षित करना माता-पिता का कर्त्तव्य है। राजा दिलीप भी सन्तान की भांति प्रजा की रक्षा करते थे। उसके पोषण के लिए अन्न-जल की व्यवस्था करते थे और उसे सन्मार्ग में प्रवर्तित करते थे। अतः वे ही सच्चे अर्थ में प्रजा के वास्तविक पिता थे। प्रजा के वास्तविक माता-पिता तो जन्म देने वाले केवल नाम के ही पिता थे। प्रजा के प्रति पिता का कर्त्तव्य तो राजा दिलीप ही निभाते थे। अतः वे सचमुच प्रजा के पिता थे : ''पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः'' (रघुवंश)।

विनयाधानात् विनयस्य आधानात्- (षष्ठी तत्पुरुष)। विनय का शब्दार्थ है शिक्षा, उन्हें अच्छी शिक्षा देने से, उन्हें सन्मार्ग में प्रवृत्त करने से।

रक्षणात् रक्ष् ल्युट्। पञ्चमी एकवचन। विनयाधानात् रक्षणात् भरणात् में हेतु के कारण पञ्चमी है।